विचार बिन्दु

मनुष्य को आपत्ति का सामना करने, सहायता देने के लिए मुस्कान से बड़ी कोई चीज़ नहीं है। –तिरुवल्लुवर

यही तो जीवन है!

यह सप्ताह भारत में दो बड़े साहित्यिक आयोजनों का रहा। देश की राजधानी दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला संपन्न हुआ और राजस्थान की राजधानी में जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल का आयोजन हुआ। नौ दिन तक चले विश्व पुस्तक मेले में 35 देशों के लगभग एक हज़ार प्रकाशकों ने भाग लिया, यह 53 वां पुस्तक मेला था। जयपुर में आयोजित हुए साहित्य उत्सव का यह 19वां संस्करण था और आयोजकों के अनुसार यह 'ग्रेटेस्टलिटरेरी शो ऑन अर्थ' है। दिल्ली का पुस्तक मेला और जयपुर का साहित्य उत्सव दोनों ही अपनी प्रकृति में उत्सवधर्मा हैं। दिल्ली के मेले में लोग किताबें देखने-खरीदने के साथ-साथ मेल मिलाप के लिए भी जाते हैं और लेखक गण इसे अपनी नव प्रकाशित पुस्तकों के वार्षिक लोकार्पण उत्सव की तरह भी देखते हैं। जयपुर का आयोजन तो बकौल आयोजकगण, फेस्टिवल ही है। दिक्कत तब होती है जब हम एक फेस्टिवल में जाकर गंभीर विमर्श की अपेक्षा करते हैं और फिर निराश होते हैं। जयपुर उत्सव की एक और आलोचना इसमें भारतीय भाषाओं की कम उपस्थिति को लेकर भी होती है।यह एक तथ्य है कि इसमें भारतीय भाषाओं की उपस्थित न केवल कम है, वह कम होती भी गई है। वैसे भी इसमें भारतीय भाषाओं के रूप में सर्वाधिक उपस्थिति हिंदी और राजस्थानी की ही होती है। राजस्थानी की उपस्थिति का एक बड़ा कारण इस आयोजन का राजस्थान की धरती पर आयोजित होना भी है। अन्य भारतीय भाषाओं की सहभागिता तो नाम मात्र को ही होती है। और प्राय: उस सहभागिता का माध्यम अंग्रेज़ी ही होती है।

हिंदी समाज में आम तौर पर जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल को लेकर अस्वीकार और असहमति का ही भाव विद्यमान रहा है। यह कहा जाता रहा है कि इस फेस्टिवल की मूल अवधारणा ही पूंजीवादी है और यहां जन सरोकारों तथा गंभीर विमर्श के लिए कोई जगह नहीं है। वैसे हिंदी के बहुत सारे नामचीन लेखकों ने समय-समय पर इस फेस्टिवल में भाग लिया है और उनमें से कई इसी वजह से तीखी आलोचना के शिकार भी हुए हैं। यह बात भी कम दिलचस्प नहीं है कि कई लेखकों को जब इसमें बुलाया गया, वे सहर्ष सम्मिलित हुए और उससे पहले और बाद में इसके आलोचक बने रहे। यह भी हुआ कि इसकी आलोचना करने वालों ने भी इसमें आकर सम्मानित होने से परहेज़ नहीं किया। जहां तक इस आयोजन की पूंजीवादी अवधारणा का सवाल है, जितने बड़े पैमाने पर यह होता है उसके लिए बड़ी पूंजी अपरिहार्य है, और जब पूंजी होगी तो पूंजीवाद कैसे पीछे रहेगा? आप फेस्टिवल के समर्थक हों, या विरोधी, इस बात को तो स्वीकार किया ही जाना चाहिए कि यह हमारे समय के सर्वाधिक सफल आयोजनों में से एक है। मुझे यह कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि जिन लेखकों-विचारकों के पास कहने को कुछ है और उस कुछ को नपे तुले शब्दों में कहने का कौशल है वे इस फेस्टिवल में भी मानीखेज़ बातें कहते हैं और उनको सुनने-सराहने वाले भी बहुत बड़ी संख्या में मौज़ूद रहते हैं। मुझे तो यह बात भी कम आश्चर्यजनक नहीं लगती है कि इसके आयोजक लेखन और विचार के इर्द-गिर्द ऐसा भव्य और सुव्यवस्थित आयोजन संभव कर सके हैं।

और यहीं मैं एक अन्य मुद्दे की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। असल में हमारे हिंदी समाज में सफलता और समृद्धि को लेकर एक अजीब-सा भाव विद्यमान है। हमें उस हर सफलता और समृद्धि से शिकायत होती है जिसमें हम नहीं होते हैं। अगर किसी को बड़ी रॉयल्टी मिल जाए तो हम उसमें अनेक खोट निकालने लगते हैं, अगर कोई मंच पर सफल हो जाए तो हमें उसमें स्तरहीनता की दरारें नज़र आने लगती हैं, अगर किसी को ज़्यादा पाठक मिल जाएं तो हमारे पेट में दर्द होने लगता है और वह दर्द उसकी आलोचना के रूप में प्रकट होता है। हमारे यहां ऐसे भी अहंकारी और आत्म मुग्ध लोग मौज़ूद हैं जो समय-समय पर किसी के कवि न होने के फतवे ज़ारी करते रहते हैं। अच्छे और बुरे को हमने अपनी तरह से परिभाषित कर रखा है। लोकप्रिय माध्यमों में कभी कोई गुण और गुणवत्ता हमें नज़र आते ही नहीं है। हमारे जो लेखक फ़िल्मों में गए, उनका नाम साहित्य के रजिस्टर से काटने में हमने पल भर की भी देर नहीं की। जब उनकी जन्म शताब्दी का साल आया तो हमने संकोच से माना कि शैलेंद्र भी अच्छे कवि थेऔर नीरज को अपने कवित्व को हमसे स्वीकार करवाने के लिए स्वर्गीय होना पड़ा। और भी अनेक नाम आपको याद आ जाएंगे जिनको हमारे साहित्यिक समाज ने स्वीकार नहीं किया तो नहीं ही किया। उनका दोष केवल इतना था कि वे लोकप्रिय हो गए थे। वैसे लोकप्रिय और स्तरीय के बीच की यह विभेदक दीवार है बड़ी मज़ेदार। जो साहित्यिक है उसकी भी आकांक्षा होती है कि वह लोकप्रिय हो जाए, लेकिन हो नहीं पाता है। और इसी तरह जो लोकप्रिय है वह साहित्यिक समुदाय की सराहना चाहता है लेकिन वह उसकी पहुंच से दूर रह जाती है। यही बात लेखन से होने वाली आय को लेकर भी है। भला कौन नहीं चाहेगा कि उसकी लिखी किताबें बिकें और उस बिक्री से प्रकाशक को जो आय हो उसका एक हिस्सा लेखक को भी मिले। बहुत थोड़े लेखक ऐसे हैं जिन्हें अपने लेखन से इतनी आय होती है कि वे उसी पर निर्भर रहकर भी सम्मानजनक ज़िंदगी जी सकते हैं। अधिकांश लेखक तो यह ख़्वाब ही देखते रह जाते हैं। लेकिन वे यह बात मानने को कभी तैयार नहीं होते हैं कि जिनकी किताबें बिक रही हैं उनके लेखन में कोई ख़ासियत भी है। इसके अलावा, हम तो किसी की किताब खरीदेंगे नहीं लेकिन यह चाहेंगे कि हमारी किताबें धड़ाधड़ बिकें। खरीदने वाले किसी और दुनिया के नागरिक हों, शायद।

हमारा हिंदी साहित्य विचारधारा के मामले में दो स्पष्ट खेमों में विभाजित है। एक वाम वाला खेमा जिसका प्रतिनिधित्व प्रगतिशील लेखक संघ और जनवादी लेखक संघ करते हैं, और दूसरा दक्षिण वाला खेमा जिसमें भारतीय साहित्य परिषद जैसे वे संगठन हैं जो स्वयं को राष्ट्रवादी कहते हैं। वाम खेमे के पास वर्तमान की समस्याओं के विश्लेषण के अतिरिक्त भविष्य के लिए भी एक स्वप्न है, तो दक्षिण वाले समूह के पास अतीत की गौरव गाथाएं और चमकदार नारे हैं।

इस बात को स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए कि हम हिंदी समाज वाले किताबों और लेखन के पक्ष में सकारात्मक माहौल बनाने में नाकामयाब रहे हैं। बल्कि सच तो यह कहना होगा कि हमने इस दिशा में प्रयत्न किया ही नहीं। कब हमने अपने सिवा किसी और के लेखन पर खुलकर बात की? हालत तो यह है कि हम लेखक भी इसी बात से भयभीत रहते हैं कि अगर हमारा सामना किसी अन्य लेखक से हो गया तो वह अपने लेखन के कसीदे पढ़-पढ़कर हमारे प्राण ले लेगा। क्या पता बशीर बद्र साहब ने यह शेर हम जैसों को ध्यान में रखकर ही लिखा हो – 'ख़ुदा हम को ऐसी ख़ुदाई न दे/ कि अपने सिवा कुछ दिखाई न दे।' अगर हम अध्यापक है तो कब हमने कोशिश की कि अपने विद्यार्थियों को अच्छी किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करें। हमारी साहित्यिक गोष्ठियों में क्या होता है? कभी हमने कोशिश की कि उनमें नए लोग भी आने लगें? और जो आएं, उन्हें भी अपनी बात कहने का मौका मिले! इतने लंबे, उबाऊ और बे-सिरपैर के वक्तव्य अपनी गोष्ठियों में हम देते हैं कि बेचारा नया आने वाला उस क्षण को कोसता रह जाता है जब उसने हमारी गोष्ठी में आने का फैसला किया था। सलीके से और संक्षेप में बात कहने से हमें सख़्त परहेज़ होता है।

हमारा हिंदी साहित्य विचारधारा के मामले में दो स्पष्ट खेमों में विभाजित है। एक वाम वाला खेमा जिसका प्रतिनिधित्व प्रगतिशील लेखक संघ और जनवादी लेखक संघ करते हैं, और दूसरा दक्षिण वाला खेमा जिसमें भारतीय साहित्य परिषद जैसे वे संगठन हैं जो स्वयं को राष्ट्रवादी कहते हैं। वाम खेमे के पास वर्तमान की समस्याओं के विश्लेषण के अतिरिक्त भविष्य के लिए भी एक स्वप्न है, तो दक्षिण वाले समूह के पास अतीत की गौरव गाथाएं और चमकदार नारे हैं। बहुत रोचक बात यह भी कि इस खेमे के पास ऐसा कोई लेखक नहीं है जिसकी थोड़ी बहुत भी पहचान साहित्य जगत में हो। बहुत सारे लेखक ऐसे भी हैं जो इनमें से किसी एक में ख़ुद को शामिल नहीं करते हैं, दोनों की आलोचना करते हैं और अपने बारे में कहते हैं कि वे तटस्थ हैं, जबकि दुनिया में तटस्थता जैसी कोई चीज़ होती ही नहीं है। ऐसे भी अनेक लेखक हैं जिनका लेखन किसी वैचारिक संलग्नता की मांग ही नहीं करता है। वे पेड़, नदी, पहाड़, मानवीय रिश्तों जैसे विषयों पर लिखते रहते हैं और ऐसे किसी मुद्दे को छूने से सायास बचते हैं जहां उन्हें सत्ता की या किसी विचार विशेष की आलोचना करनी पड़े। कुछ लोग साहित्य को जनवाद और कलावाद के खांचों में भी बांट कर देखते हैं और रोचक बात यह कि जो घोषित कलावादी हैं उनके लेखन में भी जनवादी तत्त्व मिल जाते हैं और जो जनवादी हैं उनके यहां कलावाद मिल जाता है। लेकिन किसी पर एक ब्रांड का ठप्पा लग गया तो उसे उसी तरह देखा जाता है। अलग-अलग विचारधारा के लोग दूसरी विचारधारा के आयोजनों में जाएं न जाएं इस पर प्राय: विवाद होते रहते हैं। जब हम किसी और के आयोजन में चले जाते हैं तो वह हमारा वैचारिक खुलापन होता है लेकिन जब कोई दूसरा ऐसा करता है तो यह उसका विचलन होता है या उसका पतन होता है। यही बात सम्मानों पुरस्कारों के मामले में भी होती है। अपने और दूसरों के बारे में हमारी कसौटियां भिन्न-भिन्न होती हैं।

लेकिन इतनी सारी बातों, इतने सारे विरोधाभासों और इतने सारे अंतर्विरोधों के बावज़ूद हम सब लिख रहे हैं, लिखे जा रहे हैं। पहले से ज़्यादा ऊर्जा के साथ लिख रहे हैं। लेखन से किसी को, बहुत थोड़े अपवादों को छोड़ दें, कुछ भी तो नहीं मिलता है। फिर भी लोग लिखते हैं। लिखने वालों की बिरादरी बढ़ती जाती है। पुस्तक मेले होते हैं, साहित्य उत्सव होते हैं और तमाम कमियों, असहमतियों, नाराज़गियों के बावज़ूद हम उनमें शरीक़ होते हैं। यही तो जीवन है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

शांति अधिनियम: सुरक्षा, शांतिपूर्ण, स्वच्छ-सतत ऊर्जा और नवाचार है आधार

शांतिपूर्ण उद्देश्यों वाले परमाणु ऊर्जा संबंधित पेटेंट मिलने में आसानी होगी

विकास आसावत

हाल ही संसद के शीतकालीन सत्र में पारित हुआ सस्टेनेबल हार्नेसिंग एंड एडवांसमेंट ऑफ न्यूक्लियर एनर्जी फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया यानि शांति अधिनियम, 2025 राष्ट्रपति की मंज़ूरी मिलने के बाद 21 दिसंबर, 2025 को अधिसूचित किया गया। शांति विधेयक परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 और परमाणु क्षित के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010 को निरस्त करता है। यह कानून सिविल नुक्लिअर सेक्टर से संबंधित सभी कानूनों को समाहित करता है।

यह कानून लाइसेंसिंग और अन्य प्रक्रियाओं को बरकरार रखते हुए सुरक्षा, संप्रभुता और जनहित के अटूट मानकों को बनाए रखकर ही निजी भागीदारी की अनुमति देता है। निजी कंपनियों और संयुक्त उद्यमों को परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण, स्वामित्व, संचालन और परिसमापन करने की अनुमति देता है जबकि नियामक नियंत्रण केंद्र के पास रहेगा। कानून उन गतिविधियों की स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करता है जो सरकार के पास रहेंगी।

यह विधेयक भारत के स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन और 2047 तक 100 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता प्राप्त करने के दीर्घकालिक लक्ष्य का समर्थन करता है जो भारत की लगभग 10 प्रतिशत बिजली आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है।

पेटेंट कानून में बदलाव:

यदि परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 की धारा 20 यानि की वर्तमान कानून से पूर्व स्तिथि के व्यापक दायरे में 'परमाणु ऊर्जा' से संबंधित कोई आविष्कार होता था, तो उसे पेटेंट प्रदान नहीं किया जा सकता था, चाहे विषय वस्तु ईंधन चक्र चरण हो, एनरिचमेंट हो, सुरक्षा सेंसर हो या अस्पताल इमेजिंग उपकरण हो।

पूर्व धारा 4 जो परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 की धारा 20 (1) पर आधारित के तहत, परमाणु ऊर्जा से संबंधित सभी आविष्कारों के लिए पेटेंट निषिद्ध थे, जिसमें केंद्र सरकार को अनिवार्य रूप से खुलासा करना, केंद्र सरकार की अनुमति के बिना भारत के बाहर पेटेंट आवेदन दाखिल करने पर प्रतिबंध और सरकारी प्रतिष्ठानों में या सरकारी अनुबंधों के तहत विकसित आविष्कारों का सरकारी स्वामित्व शामिल था।

नई व्यवस्था में परमाणु ऊर्जा और विकिरण के शांतिपूर्ण, नागरिक अनुप्रयोगों के आविष्कारों के लिए पेटेंट दिए जा सकते हैं, जो पेटेंट अधिनियम, 1970, और शांति एक्ट, 2025 की धारा 38 के सुरक्षा उपायों के अधीन होंगे।

पेटेंट योग्य विषय: औद्योगिक माप, चिकित्सा और कृषि संबंधी परमाणु अनुप्रयोग:

कैंसर उपचार के लिए रेडियोफार्मास्युटिकल्स, रेडियोथेरेपी सॉफ्टवेयर और नियंत्रण प्रणालियाँ।

सटीक निदान: उन्नत परमाणु इमेजिंग, एआई-सक्षम न्यूक्लियर डायग्नोस्टिक, निदान या उपचार के लिए नियंत्रित विकिरण से संबंधित प्रौद्योगिकियां और अनुकूलित ऑन्कोलॉजी।

नुक्लिअर डाटा एनालिटिक्स, पर्यावरण सुरक्षा, निगरानी और पर्यावरणीय अनुप्रयोग।

परमाणु अनुसंधान वातावरण में उपयोग किए जाने वाले दक्षता बढ़ाने वाले घटक, विकिरण वितरण प्रणालियों, रिएक्टर सुरक्षा प्रणालियाँ।।

मापन उपकरण, औद्योगिक निगरानी उपकरण, दबाव नियामक।

परमाणु संयंत्रों में प्रयुक्त नियंत्रण एल्गोरिदम, सिमुलेशन सिस्टम, रिसाव का पता लगाने और उसे रोकने की तकनीकें।

छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों, अनुसंधान एवं विकास तथा नॉन-पावर ऍप्लिकेशन्स।

अर्थात इन आविष्कारों का स्पष्ट उद्देश्य शांतिपूर्ण, नागरिक या नियामक अनुमोदन के तहत लाइसेंस प्राप्त उपयोग होना चाहिए।

सरकार का नियंत्रण रहेगा:

पेटेंट कानून की धारा 35, 39 व 157ए के तहत जो अविष्कार राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए, संवेदनशील, जो रणनीतिक सरकारी गतिविधियों से संबंधित हैं, या जो राष्ट्रीय सुरक्षा पर असर डालते हैं, उन्हें पेटेंट नहीं कराया जा सकता।

गतिविधिया जो केंद्र सरकार या उसके पूर्ण स्वामित्व वाली किसी संस्था या कारखाने द्वारा ही स्थापित या संचालित की जाएंगी:

निर्धारित या रेडियोएक्टिव पदार्थों का एनरिचमेंट या आइसोटोपिक सेपरेशन (जब तक कि अन्यथा सूचित न किया जाए)।

खर्च किए गए ईंधन का प्रबंधन जैसे रीप्रोसेसिंग, रीसाइक्लिंग, रेडियोन्यूक्लाइड सेपरेशन, और उच्च-स्तरीय कचरे को संभालना।

भारी पानी का उत्पादन और अपग्रेडेशन।

सरकार द्वारा विशेष रूप से अधिसूचित कोई अन्य सुविधाएं या गतिविधियां।

कुछ महत्वपूर्ण पहलू:

आवेदक पेटेंट फाइलिंग से पूर्व विषय-वस्तु को अच्छे से विश्लेषण कर ले, तब दावों में परमाणु शब्दावली को आसानी से प्रयुक्त कर सकेंगे ((शांति अधिनियम की धारा 38(1) और 3(5) आधार बनेगा)।

पेटेंट पात्रता का मूल्यांकन अब पेटेंट कानून और क्षेत्र में संप्रभु सुरक्षा प्रावधानों और विषय विशिष्ट एक्सक्लूशन पर आधारित होगा।

रिसर्च और उद्योग में अनिश्चितता कम करके, शांतिपूर्ण अनुप्रयोगों- में नवाचार को सक्षम बनाकर भारत के रणनीतिक बौद्धिक संपदा पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करेंगे।

पेटेंट ऑफिस द्वारा समबन्धित प्राधिकरण के सहयोग से परमाणु ऊर्जा संबंधी आविष्कारों के परीक्षण के दिशानिर्देश जारी हो।

शांतिपूर्ण परमाणु प्रौद्योगिकी को परिभाषित करने के लिए कानूनी मानदंड निर्धारित हो।

नया कानून उन नवप्रवर्तकों, वाणिज्यिक के साथ साथ अनुसंधान व विकास संस्थानों के लिए मायने रखता है, जिन्हें पहले लगता था कि भारत में नुक्लियर ऊर्जा व रेडिएशन समन्धित समस्त श्रेणीयों पेटेंट के लिए पूर्ण रूप से बंद है।

यह बदलाव उस समय पर परिलक्षित हुआ है जब भारत अपनी क्लीन एनर्जी के दायरे को बढ़ाने के साथ अन्य क्षेत्र जैसे हाई-एन्ड मैन्युफैक्चरिंग सहित अन्य स्ट्रेटेजिक एरिया में निवेश कर रहा है। आने वाला नजदीक समय महत्वपूर्ण होगा जिसमे पेटेंट ऑफिस के संभावित दिशानिर्देश, पेटेंट ऑफिस द्वारा परीक्षण रिपोर्ट, सम्बंधित न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय, समबन्धित विभाग द्वारा जारी कोई स्पष्टीकरण, स्टेकहोल्डर्स के सुझाव आदि से पेटेंट योग्यता में स्पष्टता आएगी।

-विकास आसावत,
पेटेंट अटॉर्नी एवं एडवोकेट

राज्यपाल बागड़े ने पुष्कर में श्री साई धाम मंदिर का लोकार्पण किया

पुष्कर, (निसं)। तीर्थ नगरी पुष्कर के खरेखड़ी रोड पर नवनिर्मित श्री साई बाबा मंदिर का लोकार्पण रविवार को राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने वैदिक मंत्रोच्चार और विधि-विधान के साथ किया। इस अवसर पर पुलिस एवं प्रशासन द्वारा सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे।

रविवार सुबह राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े समारोह में भाग लेने श्री साई धाम पहुंचे। उन्होंने साई बाबा के दर्शन कर दीप प्रज्ज्वलन के साथ पूजा-अर्चना की तथा नवनिर्मित मंदिर का लोकार्पण किया। कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, पुष्कर नगर परिषद के निवर्तमान सभापति कमल पाठक, उपसभापति शिव स्वरूप महर्षि, भाजपा नेता अरुण वैष्णव एवं सामाजिक कार्यकर्ता अरुण पाराशर ने राज्यपाल का माला पहनाकर स्वागत किया। लोकार्पण के पश्चात राज्यपाल बागड़े ने साई धाम परिसर में स्थित नवग्रह मंदिर सहित अन्य देवी-देवताओं के मंदिरों के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। साई मंदिर के पदाधिकारी विशाल नवाल ने बताया कि मंदिर परिसर में देवी-

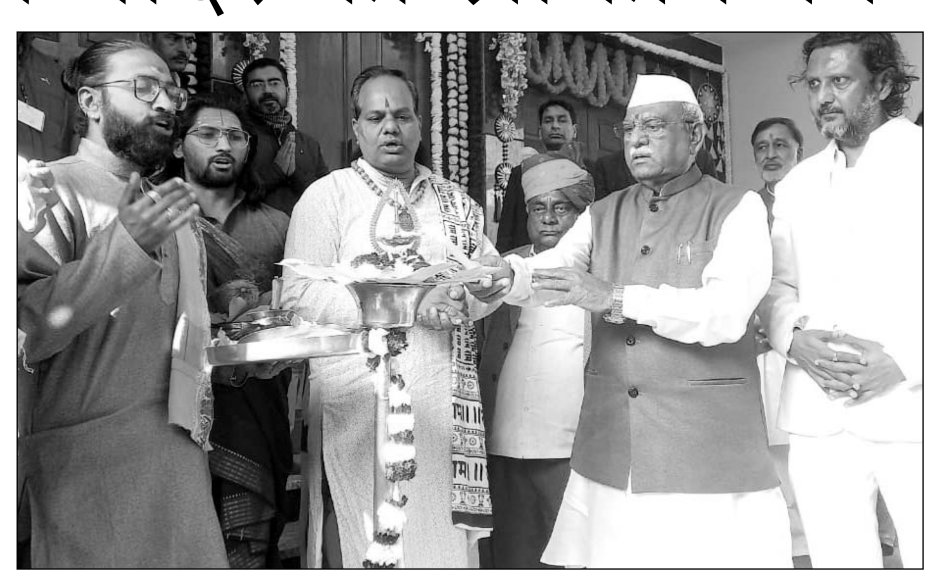

पुष्कर में नवनिर्मित श्री साई बाबा मंदिर का लोकार्पण राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने किया।

देवताओं की प्रतिमाओं के साथ नवग्रह, नक्षत्रों से संबंधित पौधों का रोपण भी किया गया है।

पत्रकारों से बातचीत में राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि पुष्कर के खरेखड़ी स्थित साई धाम को राजस्थान वासियों के लिए शिर्डी के साई बाबा धाम की तर्ज पर विकसित किया गया है, जिससे प्रदेशवासियों को यहीं शिर्डी जैसे आध्यात्मिक अनुभव का लाभ मिलेगा। उन्होंने आमजन से पर्यावरण संरक्षण का आव्हान करते हुए अधिक से अधिक पौधे लगाने का संदेश दिया।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े के पुष्कर आगमन पर जवाहर फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने गुलदस्ता भेंट कर उनका स्वागत किया। फाउंडेशन के प्रभारी शिवकुमार बंसल ने राज्यपाल

■ लोकार्पण के पश्चात राज्यपाल बागड़े ने साई धाम परिसर में स्थित नवग्रह मंदिर सहित अन्य देवी-देवताओं के मंदिरों के दर्शन कर आशीर्वाद लिया

को संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि जवाहर फाउंडेशन द्वारा समाजसेवी एवं उद्योगपति रिजु झुनझुनवाला के मार्गदर्शन में अजमेर सहित राजस्थान के विभिन्न जिलों में 11 स्वाभिमान भोज रसोई संचालित की जा रही हैं। इन रसोइयों के माध्यम से प्रतिदिन लगभग पांच हजार जरूरतमंदों को मात्र एक रुपये में शुद्ध, स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाता है। इस अवसर पर फाउंडेशन के मनीष अग्रवाल, मुकेश राठौर, भारत सिंह राणा, राजेंद्र वर्मा एवं मनीष सेन सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मौनी अमावस्या पर पुष्कर में आस्था का महासंगम दिखा

देश के विभिन्न हिस्सों से आए हजारों श्रद्धालुओं ने पवित्र सरोवर में स्नान किया

पुष्कर, (निसं)। माघ मास की पावन मौनी अमावस्या के अवसर पर तीर्थराज पुष्कर में श्रद्धा और आस्था का अद्भुत नज़ारा देखने को मिला। रविवार तड़के से ही पुष्कर सरोवर के बावन घाटों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। देश के विभिन्न हिस्सों से आए हजारों श्रद्धालुओं ने पवित्र सरोवर में स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित किया तथा अपने दिवंगत पूर्वजों की आत्मशांति के लिए पिंडदान एवं तर्पण किया।

ब्रह्म मुहूर्त से ही श्रद्धालुओं का आगमन शुरू हो गया था। सरोवर के घाटों पर वैदिक मंत्रोच्चार, पूजा-अर्चना और धार्मिक अनुष्ठानों का वातावरण बना रहा। श्रद्धालु स्नान के उपरांत दान-पुण्य कर परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना करते नजर आए।

कथा वाचक पंडित आशुतोष शास्त्री ने बताया कि शास्त्रों में मौनी अमावस्या का विशेष महत्व बताया गया है। इस दिन मौन रहकर स्नान, दान और पुण्य कर्म करने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है तथा पितृ दोष से मुक्ति मिलती है। उन्होंने कहा कि पुष्कर सरोवर में इस दिन किया गया स्नान समस्त तीर्थों के स्नान के समान फलदायी माना गया है।

तीर्थ पुरोहित फूलचंद पाराशर ने बताया कि बावन घाटों पर सुबह से लेकर दोपहर तक श्रद्धालुओं का निरंतर सैलाब देखने को मिला। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पिंडदान, तर्पण और श्राद्ध कर्म संपन्न कराए। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए घाटों पर पुरोहितों एवं सेवाधारियों की व्यवस्था रही। मौनी अमावस्या के चलते पुष्कर में मेला सा

■ श्रद्धालुओं ने दान-पुण्य कर परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की

माहौल बना रहा। श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए प्रशासन द्वारा सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था के इंतजाम किए गए। पुलिस बल घाटों एवं प्रमुख मार्गों पर तैनात रहा, वहीं पालिका द्वारा सफाई एवं पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की गई। दिनभर पुष्कर में भक्ति, आस्था और अध्यात्म का अनुपम संगम दिखाई दिया। सरोवर के घाटों पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़ ने एक बार फिर पुष्कर को आध्यात्मिक चेतना का केंद्र बना दिया।

माघ मास की पावन मौनी अमावस्या पर पुष्कर सरोवर के बावन घाटों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ नजर आई।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 19 जनवरी, 2026

माघ मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र दिन 11:52 तक, वज्रयोग रात्रि 8:45 तक, किस्तुघ्न करण दिन 1:48 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरू-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज कुमार योग दिन 11:52 से 2:15 तक है। आज श्री वल्लभ जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:40 तक, शुभ 9:59 से 11:18 तक, चर 1:57 से 3:16 तक, लाभ-अमृत 3:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:54

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

वृष
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण एवं धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

सिंह
वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

धनु
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।